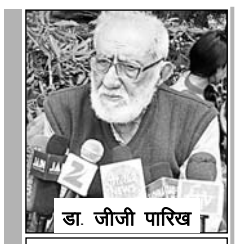
डा. जीजी पारिख

धर्मनिरपेक्षता, जनतंत्र समाजवाद, समानता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए समर्पित समाचार पत्र

हिंदी साप्ताहिक

जनता रैबार

रविवार 04 मई 2014

₹ 1

पृष्ठ संख्या 2, 3 और चार पर देखें युसुफ मेहरअली सेंटर की ओर से जारी आपदा राहत और पुनर्वास कार्यो की की रिपोर्ट

1 - 6

मसूरी से प्रकाशित समाचार पत्र | वर्ष 02 अंक 19, पृष्ठ : 06 | RNI-UTTHIN/126435/2013 | मूल्य :1/-प्रति, वार्षिक 120 रुपये

कांग्रेस के भीतर और बाहर खुद को जमीनी नेता के तौर पर पेश करते रहे हरीश रावत ने सीएम बनने के बाद अपनी प्राथमिकताएं शायद अब बदल ली हैं। वर्तमान में चल रहे लोकसभा और फिर निकायों के चुनावी मौसम को अपने अनुकूल करने के लिए उन्होंने ढेर सारे लोकलुभावन फैसले भी लिए, लेकिन राज्य के कुछ अहम सवालों पर वह न केवल अपने पूर्ववर्तियों के नक्शेकदम पर चल रहे हैं, बल्कि पूर्व सीएम की तारीफों के पुल बांधते हुए भी नहीं थक रहे। इसे उनकी राजनैतिक मजबूरी या सियाशी कौशल कुछ भी कह सकते हैं, मगर भ्रष्टाचार पर उनकी चुप्पी इस नवोदित राज्य की जनता के लिए आश्चर्यजनक है। घोटालों–भ्रष्टाचारों में लिप्त अफसरों के सीएम विजय बहुगुणा की तरह ही उन्होंने ने भी अपने करीब रखना ही मुनासिब समझा है। अपने कारनामों के लिए चर्चा में रहे नौकरशाह राकेश शर्मा जैसे अफसर इसकी बानगी है। बहरहाल, बीजेपी की तर्ज पर कांग्रेस ने भी पहले बहुगुणा और अब हरीश रावत को सूबे के मुखिया की कुर्सी सौंपकर रेबड़ी काटने का मौका दे दिया है। ऐसा लगता है कि प्रदेश में किस पार्टी के पास ज्याद से ज्यादा एक्स सीएम होंगे, बीजेपी–कांग्रेस में इसकी होड़ सी लगी है।

विजय बहुगुणा की राह पर हरीश रावत

जबर सिंह वर्मा

उत्तराखंड के तीसरे विधानसभा चुनाव के बाद विजय बहुगुणा को उत्तराखंड की कमान सौंपी गई। तब उन्हें पैरासूटी सीएम कहा गया था। 22 माह का उनका कार्यकाल पार्टी नेतृत्व को निराशाजनक लगा तो केंद्रीय मंत्री और हरिद्वार से सांसद हरीश रावत को 2014 में सूबे की सरकार की कमान सौंपी गई। मगर, कुर्सी संभालने के तुरंत बाद खुद को नई बहू कहने वाले हरीश रावत ने कुछ कर दिखाने के लिए एक महीने का समय मांगा था। मगर, मगर, उनका एक महीना और चार दिल सिर्फ मंत्रिमंडल के गठन में लग गए। इस बंटवारे में भी मंत्रीगण इतने भड़के कि तब उठा तुफान इस चुनावी मौसम में भी शांत होता नहीं दिख रहा। खासकर बहुगुणा राज में मलाईदान मंत्रालय संभाल रहे मंत्रियों को उनके पर कतरना गंवारा नहीं गुजर रहा। थक हार कर अब सीएम को अपने निर्णय पर पुनर्विचार को मजबूर होना पड़ रहा है।

आपदा का फायदा उठाने का सवाल हो या जमीनों के घाटालों के मसले। रावत समर्थक खासकर उनके खासमखास और रिश्तेदार स्पीकर गोबिंदसिंह कुंजवाल बहुगुणा सरकार को इस मुद्दों पर अक्सर कटघरे में खड़े करते रहे हैं। मगर, कुर्सी संभालते ही वहां स्पीकर साबह ने मुंह चलाना बंद कर दिया है, वहीं हरीश रावत का मौन भी भ्रष्टाचार के मसले पर कई सवाल खड़े कर रहा है। अफसरशाही में व्यापक फेरबदल के बावजूद राकेश शर्मा जैसे विवादित अफसरों को तो वह छु तक नहीं पाए। इतना ही नहीं करोड़ों के वारे–न्यारे करने वाले भ्रष्टतम अफसरों बीएस चलाल और एनएस नगन्याल के खिलाफ कार्रवाई की बजाय उन्हें पोस्टिंग दी गई। इससे हेराफेरी करने वाले अफसरों के हौसले तो बुलंद हो गई हैं। जाहिर है, अब उनके नक्शे–कदम पर चलने वाले अफसर भी पैदा होंगे, जो इस प्रदेश को नए मुखिया के नेतृत्व में गर्त में ले जाने से भी नहीं चुकेंगे।

बहुगुणा के सीएम बनने के बाद से ही उनके खिलाफ जहर उगलने वाले हरीश रावत को वह अब अचानक विकास पुरूष नजर आने लगे हैं। मुख्यमंत्री रहते सार्वजनिक सभाओं में "मैं खांटी कांग्रेसी हूं" जैसे बयान देने वाले हरीशदा गैर कांग्रे. सियों के प्रति अपना रवैया स्पष्ट कर चुके हैं। अनुभवी जमीनी नेता माने जाने वाले हरीश रावत का होमवर्क वास्तव में इतना कमजोर है कि एक माह का कार्यकाल पूरा होने पर वे मुख्यमंत्री के कार्यों का हिसाब तक जनता को नहीं दे सके। शायद इसलिए कि वे होमवर्क में कमजोर हैं या फिर रिपोर्ट कार्ड में बताने के लिए उनके पास किया–धराया कुछ था ही नहीं। हां, 10 जनपद में जरूर हिसाब देने पहुंच गए। यह पूर्व सीएम विजय बहुगुणा की कार्यशैली जैसा ही है। सीएम बनने के 24 घंटे बाद से ही पेड न्यूज के जरिए इमेज बिल्डिंग में जुटे नए सीएम अपनी

बची–कूची इमेज को भी बंटा लगा रहे हैं। इससे उन पर वही सवाल खड़े होने लगे हैं, जो वह पूर्ववर्ती सीएम पर लगाते हुए कुर्सी हथियाने तक में कामयाब हुए थे। दो मंत्री मंत्रीप्रसाद नैथानी और हरक सिंह रावत के तर्ज पर सीएम रावत पर भी नियम विरूद्ध स्थानांतरण के आरोप लग चुके हैं। उनकी एक मंत्री अमृता रावत पॉलीहाउस मामले में पहले ही विवादों में है। मगर, अब इस मसले पर सीएम पर भी सवाल उठने लगे हैं। क्योंकि, सीएम बनते ही उन्होंने अमृता रावत से उद्योग विभाग छीन लिया था, लोग इस कदम को सजा के तौर पर देख रहे थे और सही बता रहे थे। मगर, हाल ही में उन्होंने उद्यान विभाग फिर से अमृता रावत को सिर्फ दोबारा सौंपा ही नहीं, बल्कि यह विभाग उनसे लेने पर खेद भी प्रकट किया। विश्वासमत पर के दौरान भी उन्होंने हरक सिंह रावत से यह कहते हुए काफी मांगी की उनकी चूक की वजह से हरक सिंह रावत का अपमान हुआ।

कम नहीं हैं मुश्किलें : बजट सत्र में रावत ने भले ही विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव पर सदन के भीतर जीत हासिल कर ली हो, मगर तीन सप्ताह में मंत्रियों को बिना विभाग दिए 7 कैबिनेट बैठकें कर 100 से अधिक फैसले और एक हजार के करीब षासनादोष करवाकर जिस प्रकार मंत्रियों के विभागों का बजट नींबू की तरह निचोड़ दिया है, उसका असर देर–सबेर दिखेगा जरूर। रावत के कुर्सी संभालते ही उनके धुर विरोधी सांसद सतपाल महाराज का भाजपा में जाना वैसे ही सरकार की स्थिरता पर सवाल उठा रहे हैं। चुनावसभा को संबोधित करने रूढ़की पहुंची यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती भी प्रदेश कांग्रेस को दलित विरोध बताकर नहीं चेतने पर समर्थन वापसी की चेतावनी दे चुकी है। बसपा के वर्तमान में तीन विधायक हैं, और उनके समर्थन से ही कांग्रस की सरकार चल रही है। बहुगुणा अभी भी सदमें से नहीं निकले हैं। लोकसभी चुनावों के बाद सभी मोर्चा खोलेंगे, इससे हरीश रावत की मुश्किल बढ़ना तय है।लोस चुनाव रिजल्ट भी आने हैं।

GANNON DUNKERLEY & CO.LTD.

(An ISO 9001-2000 Company)

REGISTERED OFFICE

NEW EXCELSIOR BUILDING, 3RD FLOOR, A.K. NAYAK MARG
FORT, MUMBAI-400001

TEL:91-22-22051231, FAX-91-22-22051232
Website : gannondunkerley.com
E-mail : gdho1@mtnl.net.in

GANNONS ARE SPECIALISTS IN INDUSTRIAL STRUCTURES, ROADS,BRIDGES (RCC AND PRESTRESSED CONCRCETE), RAILWAY TRACKS, THERMAL POWER, FERTILIZER, CHEMICAL, PAPER AND CEMENT PLANTS, WATER & WASTE WATER TREATMENT PLANTS, PILING FOUNDATION & FOUNDATION ENGINEERIG.

GANNONS ARE ALSO PIONEERS IN MATERIAL HANDELING WORKS, MANUFACTURE OF PRESTRESSED CONCRETE SLEEPERS, ERECTION OF MECHANICAL EQUIPMENTS & PIPING AND SUPPLY OF TEXTILE MACHINERY AND LIGHT ENGINEERING ITEMS

OFFICES AT :

AHMEDABAD - CHENNAI - COIMBATORE - HYDERABAD - KOLKATA
MUMBAI - NEW DELHI

कांडीखाल, थत्युड़ में दरी और पत्तल बनाने का काम सीख रहे हैं प्रभावित

कांडीखाल। कांडीखाल और थत्युड़ में वाईएमसी कांडीखाल के सहयोग से पुराने कपड़े की दरी और पत्तल बनाने का काम शुरू हो चुका है। यहां लगी दो–दो हैंडलूम के जरिए पुराने कपड़ों की दरी बेहतर ढंग से बनाई जा रही है। उन का काम भी हो रहा है। दोनों की सेंटरों में इससे पहले आपदा प्रभावितों के लिए दरियां बनाई जा रही थी, मगर अब स्थानी ग्रामीणों के लिए दरी बनाने का शुरू कर दिया गया है। सेंटर के साथी सुरेंद्र और रोशन ने बताया कि कांडीखाल में बनने वाली दरी की कीकत 180 से 220 रूपये तक है। पुराने कपड़े देने की स्थिति में 100 रूपये लेकर भी दरी बनवाई जा रही है।

दरी के साथ ही दो कपड़ों की दरी देने की स्थिति में एक दरी निःशुल्क बनाकर देने का भी प्रावधान रखा गया है। क्षेत्र में हैंडलूम का काम पहली बार खुला है, इससे लोगों में भी उत्साह है। रोशन और सुरेंद्र ने बताया कि मसूरी और जौनपुर क्षेत्र से दरियां बनाने को लोग उत्सुक हैं। उधर, मालू और मैंग के पत्तों की प्लेट्स और कटोरी भी बनाई जा रही है।

इससे होने वाली आय का एक हिस्सा आपदा राहत और पुनर्वास के काम में खर्च किया जाएगा। कांडीखाल में सोप यूनिट भी स्थापित की गई है, जिसका विधिवत संचालन जल्द होने जा रहा है। वर्तमान में यहां नीम, सेंडल और कुटीर तीन किस्म के नहाने के हर्बल साबुन बनाए जा रहे हैं। सेंटर जल्द ही स्थानी फल–फूलों से बनने वाले जूस, मोमबत्ती समेत अनेक उत्पाद बनाने की तैयारी में जुटा है। कंप्यूटर और सिलाई–कड़ाई–बुनाई का प्रशिक्षण केंद्र भी जल्द ही थत्युड़ और कांडीखाल में स्थापित किया जाएगा।

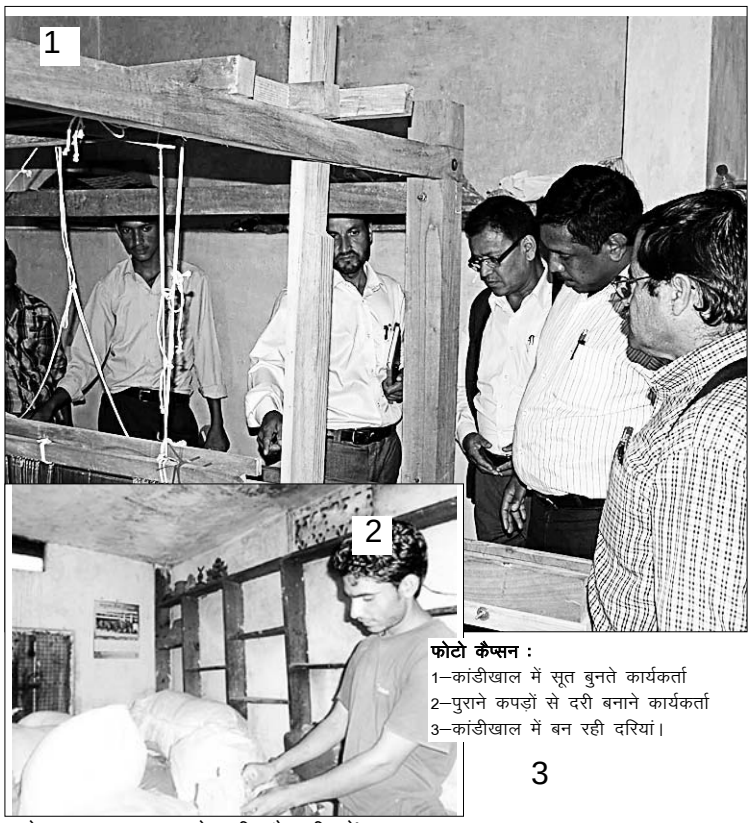

फोटो कैप्सन :
1–कांडीखाल में सूत बुनते कार्यकर्ता
2–पुराने कपड़ों से दरी बनाने कार्यकर्ता
3–कांडीखाल में बन रही दरियां।

वाईएमसी के संयोजक जबर सिंह वर्मा ने बताया कि उद्योग, प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने का मुख्य मकसद स्थानीय नौजवानों को रोजगार मुहैया कराना है और संस्था इस दिशा में लगातार प्रयास कर रही है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और वरिष्ट समाजवादी चिंतक और वाईएमसी के निदेशक डा. जीजी पारिख इस काम में लगातार वाईएमसी कांडीखाल की मदद कर रहे हैं।

राहत और पुनर्वास कार्यों में मदद की अपील

प्रिय साथियो,

उत्तराखंड में राहत और पुनर्वास के लिए वाईएमसी कांडीखाल की ओर से जा रहे कार्यों की कुछ संक्षिप्त जानकारी जनता रैबार के इस अंक में आप लोगों तक पहुंचाई गई है। हम भविष्य में भी प्रभावित गांवों में पुनर्निर्माण का कार्य जारी रखने का मन बना चुके हैं। जिसका कुछ विवरण देने का प्रयास किया गया है। ज्यादातर संस्थाए त्वरीत राहत देने के बाद अब लौट चुकी हैं। जबकि, कुछ उत्तराखंड सरकार की गलत नीतियों के चलते राहत और पुनर्निर्माण का कार्य छोड़ने को मजबूर हैं।

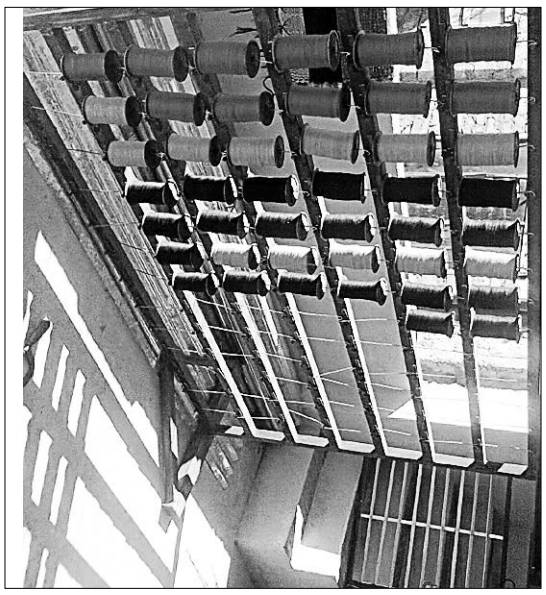

हमारी उत्तराखंड रीलिफ कमेटी में सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और युसुफ मेहरअली सेंटर के निदेशक डा. जीजी पारिख, भारत सरकार खाद्यी कमशीन के पूर्व चेयरमैन और वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता हरीश शाह, पूर्व विधायक एवं किसान नेता डा. सुनीलम, पूर्व सांसद स्व. सुरेंद्र मोहन जी की धर्मपत्नी श्रीमति मंजू मोहन, युवा बिरादरी मुंबई की राष्टीय संयोजि. का गुड्डी, वाईएमसी कांडीखाल के संयोजक जबर सिंह वर्मा, विजय प्रताम आदि शामिल हैं।

ये सभी वरिष्ठ साथी न सिर्फ राहत और पुनर्निर्माण कार्य में मदद कर रहे हैं, बल्कि स्वयं उत्तराखंड आकर हरसंभव मदद भी कर रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि प्रभावितों की मदद को आगे आकर हाथ बंटाने का काम करें। आप चेक के जरिये या रसीद प्राप्त कर नगद राशि की मदद कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए हमारी वेवसाइट www.yusufmeherally.org http://ymcuttrakhand.weebly.com पर संपर्क करें। हमार उत्तराखंड कार्यालय का पता है –

वाईएमसी, कांडीखाल, पोस्ट–कैंपटी, वाया मसूरी, उत्तराखंड।–248179
फोन–9927145123, 9411513894,
Email-jabars9@gmail.com

मसूरी में पर्यटन सीजन शुरू रोज पहुंच रहे लाखों सैलानी

मसूरी। पहाड़ों की रानी मसूरी समेत उत्तराखंड के विभिन्न पर्यटक स्थलों पर सैलानियों की आमद बढ़ गई है। मैदानों में गर्मी बढ़ने और स्कूलों की छुट्टिी होने के कारण अधिकांश लोग पहाड़ों की हसीन और ठंडी वादियों का रूख कर रहे हैं। चार मई से चार धाम यात्रा मार्ग खुलने से भी धार्मिक पर्यटकों की तादात में लगातार इजाफा हो रहा है। हालांकि, पिछले साल आई आपदा की वजह से इस साल चार धाम यात्रा में पहले जैसा उत्साह रहने की गुंजाइश कम ही है। मगर, फिर भी लोग उत्तराखंड पहुंचकर चारधाम यात्रा के लिए रवाना हो रहे हैं। आपदा का मसूरी–नैनीताल जैसे पर्यटक स्थलों पर कोई असर नहीं है। इसलिए यहां काफी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। बीते साल आपदा के चलते पर्यटकों ने उत्तराखंड का रूख ही नहीं किया था, जिसकी वजह से पर्यटन को काफी नुकसान हुआ था। व्यवसायियों को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा। मगर, इस साल सैलानियों की चहलकदमी बढ़ने से इनके चेहरे खिले हुए हैं। इस साल पर्यटन व्यवसाय अच्छा रहने की उम्मीद है। हालांकि उत्तराखंड में सब कुछ मौसम के मिजाज पर ही निर्भर रहता है।

प्यारी नारी

घर में रोशन दिए जलाती
उजयारा घर में फैलाती
वही तो है प्यारी नारी
पुत्री बनकर जग में आती
खुशियां झोली भरके साथ में ताली
वही तो है प्यारी नारी
खेले–कूदे घर–आंगन में
छुप जाए झट मां के आंचल में
वहीं तो है प्यारी नारी
एक दिन जीवन में उसके समय ऐसा आता
छोड़ अपना आशियाना जाना उसे पड़ता
वही तो है प्यारी नारी
बहु–भाभी पत्नी रूप में
नए परिवार को वो अपनाती
वही तो है प्यारी नारी
जिस दिन मां का रूप वो पाती
मंद–मंद मन में मुस्कुराती
वही तो है प्यारी नारी
जब रूप लिया दादी–नानी का
जीवन पूर्ण हुआ प्यारी नारी का

मनीषा वर्मा, कांडीखाल, जौनपुर टि.ग.

माता–पिता

एक माला में जीवन को जिन्होंने पिरोया
भाई–बहन जैसे मोतियों को जिन्होंने संजोया
जन्म दिया जिन्होंने दिया आंचल प्यारा
प्यार दिया जिन्होंने कहा आंख का तारा
वही हैं वो मां–बाप जिन्हें मिला न सहारा

जन्म दिया मां ने, दिया बचपन प्यारा
आंचल में लेकर बोली थीं वह मेरा लाडला न्यारा
भूख–प्यास की परवाह भूल बच्चों को खाना खिलाया
जान भी दे देने वाली उसी मां को आज ऐसे ठुकराया
घर से आज निकाला उसी मां को जिसने दूध पिलाया
बीती क्या उस मां से पूछो जिसके बच्चों ने ये दिन दिखलाया

पापा ने अंगुली पकड़ चलना सिखाकर कहा अपना सहारा
पर साथ में उनके क्या हुआ रह आज क्यों गए बेसहारा
जिसकी जिद को किया था पूरा रखकर अपना काम अधूरा
आज साथ में रहना पसंद न करे वही मां–बाप का दुलारा

मनीषा वर्मा, कांडीखाल, जौनपुर टि.ग.

युसुफ मेहरअली सेंटर की ओर से आपदा प्रभावित पापरा गांव में बनाए गए स्कूल में पढ़ते बच्चे। ग्रामीण महिलाओं ने वाईएमसी के हैंडलूम सेंटर में निर्मित दरियां भी बच्चों को भेंट की है।

संपादकीय

अब तक नहीं हो सका आपदा में बही सिंचाई गूलों और पेयजल लाइनों का जीर्णोद्वार

जनता रैबार ब्यूरो

उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के बाद टूटी पेजयल लाइनों और सिंचाई गूलों का निर्माण अभी तक नहीं हो पाया है। हजारों श्रद्वालुओं और स्थानीय नागरिकों की जान छीनने वाली इस भंयकर त्रासदी ने किसानों के खेत, खलियान और सिंचाई नहरों, पेयजल लाइनों का

आपदा प्रभावित हजारों ग्रामीण जनता त्रस्त,

नामों निशां मिटा दिया था। इससे लोगों का जनजीवन अस्त व्यस्थ हो गया था। खेल–खलियान बहने से जहां लोगो के सामने खेती–किसानी का संकट पैदा हो गया था, वहीं सिंचाई गूलों के बह जाने से बचे–कूचे खेतों में भी सफल नहीं हो पा रही है। लोग पानी के अभाव में अपने लिए सब्जी तक नहीं उगा पा रहे हैं। पानी के लिए भी त्राही त्राही मची हुई है। गांव की महिलाएं कई किमी दूर से आज भी सिर पर पानी ढोकर लाने को मजबूर हैं। मसूरी जैसे प्रसिद्व हिल स्टेषन से सटे गांवों में दर्जनों गांवों में आज भी सिंचाई गूलों और पेयजल लाइनें दुरूस्त नहीं हो सकी है। इससे लोगों में नाराजगी है, जबकि लापरवाही सरकारी महकमों की पोल भी खोल रही है। ग्रामीणों का कहना है कि विभाग सर्वे तक सीमिति है, जबकि काम के लिए पैसे नहीं मिल पा रहे हैं।

नहीं चलेगा मशविरे का नाटक

विमल भाई

विश्वबैंक ने पर्यावरण और सामाजिक संदर्भ में अपनी कुछ नीतियां बनायी हुई। जिसे वो पर्यावरण और पुर्नवास रक्षात्मक नीतियों का नाम देता है। 1992 में नर्मदा घाटी से भगाये जाने के बाद जलविद्युत परियोजना में 15 वर्ष तक बैंक ने किसी बांध को पैसा नहीं दिया। अब कुछ वर्षों से धीरे–धीरे बांध परियोजनाओं में पैसा लगाना शुरू कर रहा है। उसकी दलील है कि उस पर भारत के निदेषक का दबाव है। विश्व बैंक में हर साझेदार देश का एक निदेशक होता है। हिमाचल में रामपुर जलविद्युत परियोजना के बाद अब उत्तराखंड में अलकनंदागंगा पर विश्णुगाड–पीपलकोटी जलविद्युत परियोजना में उधार दे रहा है। विष्वबैंक जिस भी परियोजना में पैसा उधार देता है वहां पर्यावरण व सामा. जिक प्रभावों के तथाकथित उंचे मानकों को दिखाने की कोशिश करता है। पर्यावरण व सामाजिक प्रभावों के संदर्भ में विश्वबैंक समय–समय पर अपनी रक्षात्मक नीतियों को उंचा बनाने का दिखावा करता है।

इस समय बैंक की यही प्रक्रिया चल रही है। इसमें आठ पर्यावरण और सामाजिक रक्षात्मक नीतियों पर पुर्नविचार में का प्रस्ताव है जिसमें पर्यावरण आंकलन प्राकृतिक रहवास, रोग प्रबंध, आदिवासी लोग, भौतिक–सांस्कृति संसाधन, अनैक्षिक विस्थापन, वन, बांध सुरक्षा और पर्यावरण व समाजिक सुरक्षात्मक नीतियों के लिए एक प्रक्रिया बनाना शामिल है। यह बताया गया कि बैंक इन मशविरा बैठकों के बाद आंतरिक विमर्षों और मश्ज्ञविरों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विमर्शों का दौर चलायेगा 5 अप्रैल को दिल्ली, 8 अप्रैल को बंगलोर और 10 अप्रैल भुवनेष्वर में बैंक ने इस संदर्भ में तीन मशविरा बैठकें बुलाई। जिसमें उसका इरादा ''सिविल सोसाइटी'' से चर्चा करने का था। इससे साफ झलकता है कि बैंक परियोजना प्रभावितों और उनके सहयोगी संगठनों को ना सुनना चाहता है ना ही समस्याओं के निदान के लिये गंभीर है। इसलिये बैंक पोषित विभिन्न परियोजनाओं के प्रभावितों और उनके सहयोगी संगठनों ने इन मशविरा बैठकों का विरोध किया। जिसकी शुरुआत दिल्ली में आयोजित भारत की पहली मशविरा बैठक से प्रारंभ हुई। जनआंदोलनो का राष्ट्रीय समंवय और दिल्ली समर्थक समूह द्वारा आयोजित प्रदर्शन में आंदोलनकारी 5 अप्रैल को इण्डिया हैबिटेट सेंटर के हाल में बैठक स्थल में घुस गये और नारे लगाये विश्व बैंक भारत छोड़ों, मशविदे का नाटक बंद करो, पुराना हिसाब साफ करो और साथ ही वे मंच के आगे जाकर खड़े हो गये। उन्होने उपस्थित लोगों से निवेदन किया कि वे हाल छोड़ दें। जिसमें विष्वबैंक के कुछ सलाहकार व कुछ नये आमंत्रित और तथाकथित सभ्य समाज के प्रति. निधियों थे। एक आमंत्रक ने कहा कि यह मर्यादा के खिलाफ है विष्वबैंक हमारा मेहमान है और हमें उनकी सुननी चाहिए। जिसका लेखक ने उत्तर दिया कि आतातायी मेहमान नहीं होते हैं और जो उन्हें मेहमान समझते हैं वो अपना सम्बंध बनाये किन्तु हमने बैंक की कारग. जारियों को देखा है।

बैंक की प्रारम्भिक आर्थिक मदद के कारण ही नर्मदा घाटी में आदिवा. सियों समाज की बरबादी हुई है। विष्वबैंक एक तरफ गंगा के सफाई के लिए करोड़ों रुपया दे रहा है दूसरी तरफ गंगा पर ही बड़े बांधों के लिए पर्यावरण और आर्थिक लाभ–हानि के मूलभूत प्रश्नों को अपनी ही रक्षात्मक नीतियों का उल्लंघन करते हुए पैसा दे रहा है। उत्तर प्रदेष के सिंगरौली में एनटीपीसी की ताप विद्युत परियोजना से निकलने वाली राख को ठंडा करने के लिए जो बांध बनाया उससे उजड़े मात्र आठ परिवारों का पुर्नवास विश्वबैंक नहीं कर पाया। इसके अलावा ऐसे अनेक उदाहरण हर उस परियोजना में मिलेंगे जहां विश्वबैंक ने पैसा लगाया है जैसे पूर्वी खदानें और एलाइन–दुहंगन, रामपुर, लुहरी, विष्णुगाड–पीपलकोटी जैसे बांध परियोजनायें आदि।

इसलिए बैंक का रक्षात्मक नीतियों पर चर्चा करना पूरी तरह बेईमानी है। बैंक की हिम्मत नहीं है कि प्रभावितों से सीधे जाकर बात कर सके। बैंक ने उसके द्वारा समर्थित परियोजनाओं में पुनर्वास और पर्यावरण की अब तक की समस्याओं को अनदेखा किया है और दूसरी तरफ इस तरह की मशविरा बैठकें आयोजित करने का ढोंग करता है। कार्यकर्ताओं ने 4 घंटे तक बैठक में कब्जा जमाये रखा और इस तरह की बैठकों की पोल खोली। साथ चेतावनी भी दी की हम अगली मश. विरा बैठकों में भी ऐसा ही करेंगे। कब्जे के दौरान मधुरेश कुमार ने देश भर के साथी आंदोलनो की ओर से एक पर्चा पढ़ा जिसमें बताया आंदोलनों का पक्ष क्या है बताया गया। वास्तव में इस तरह की पहले आयोजित बैठकों/चर्चाओं में हजारों समूहों और व्यक्तियों ने हिस्सा लिया है और मगर सब बेनतीजा। चूंकि विष्वबैंक के बड़े साझेदार फ्रांस, जर्मनी, जापान, इंग्लैंड और अमेरिका जो कि बहुत ही गम्भीर आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहे हैं उनका दबाव है कि पर्यावरण पुनर्वास के मुद्दों को एक तरफ रखकर वैश्विक निवेश की संभावना को खोजा जाये।

बैंक टिहरी जल विद्युत निगम जैसी आपराधिक कम्पनियों को बिना उनके इतिहास देखे पैसा दे रहा है। विश्वबैंक का एक दूसरा हाथ अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम आईएफसी है जो निजी कम्पनियों को पैसा देता है। आईएफसी ने ''मध्यवर्ती वित्त ऋण'' की जो नई प्रक्रिया शुरू की है उसमें तो सभी पर्यावरण और सामाजिक दायित्वों की रक्षात्मक नीतियों से बरी कर दिया है। गुजरात में संवेदनषील पारिस्थिति वाले कच्छ क्षेत्र में 4000 मेगावाट की टाटा मुंदरा परियोजना को 4 बिलियन पैसा दिया। ऐसे ही एक बिलियन का ऋण और अन्य ऋण टाटा मुंदरा से जुड़ी परियोजनाओं को दिये। इसके बाद भी बैंक कैसे दावा कर सकता है कि वो पर्यावरण व पुनर्वास के मसलों पर लोगों से चर्चा करना चाहता है? वास्तव में बैंक सिर्फ बड़े पूंजीवादी देषों का एक औजार है जो कि भारत जैसे देषों के बाजारों को इन बड़े देशों के लिए खोलना चाहते हैं। एक दषक पहले पर्यावरण एवं वनमंत्रालय के लिये कार्यकुशलता निर्माण के लिए पैसा दिया था। यह बताने की जरूरत नहीं है कि इस मंत्रालय की कार्यकुशलता में किस तरह कि वृद्धि की है। देश का बिगड़ता पर्यावरण, बरबाद होती नदी घाटियां इस गैर जिम्मेदार मंत्रालय की बढ़ी हुई कार्यकुषलता को बताता है। 8 अप्रैल को बंगलौर की मशविरा बैठक में भी आंदोलनकारियों ने बैठक में घुसकर अपनी बात रखी। बंगलौर के वकील ने सरदार सरोवर में सोलह वर्षीय रेहमल वसावे की पुलिस द्वारा गोली मारे जाने से हुई हत्या के सदंर्भ में दो मिनट का मौन रखवाया। 10 अप्रैल को भवुनेश्वर में विश्वबैंक को पुलिस की घेराबंदी में बैठक करनी पड़ी। आईएफसी द्वारा वित्त पोशित जीएमआर कम्पनी के ताप परियोजन प्रभावित, पास्को से लेकर तमाम परियोजना प्रभावितों ने प्रदर्शन किया। मगर इसके बावजूद भी विश्व बैंक ने इस सारे विरोध को चर्चा का हिस्सा मानते हुए आगे बढ़ने की बात कही है जो फिर एक बार यह सिद्ध करता है कि विष्व बैंक जैसी तथा कथित विकास परियोजना के नाम पर पूंजीवादी देशों के हितों को साधने का ही औजार है। यह सब तौर तरीके बताते हैं कि वास्तव में विश्वबैंक की पर्यावरण और रक्षात्मक नीतियां उसकी वास्तविक कामों में कहीं कोई स्थान नहीं रखती है। मात्र एक सुंदर आवरण है।

स्वामी मुद्रक और प्रकाशक कलावती द्वारा शैलवाणी प्रिंटर्स, 1/12 न्यू चुक्खूवाला, देहरादून से मुद्रित तथा लेन एडन आउट हाउस, डिक रोड, कंपनीबाग, मसूरी, जिला देहरादून, उत्तराखंड से प्रकाशित।

संपादक

जबर सिंह वर्मा

फोन. 9927145123

9411513894

Email-

jantaraibar@gmail.com

jabars9@gmail.com

(समाचार संबंधी किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मसूरी (देहरादून) ही मान्य होगा)

संरक्षक मंडल

डा. जीजी पारिख

सुश्री मेधा पाटकर

श्री विजय प्रताप

श्री चंद्रसिंह

संपादक मंडल

डा. सुनीलम

प्रो. सुभाष वारे

विमल भाई

गुड्डी

सुरेश भाई

प्रेम पंचोली

राजेश कुमार, विरेंद्र लाल

विशेष सहयोग :

युसुफ मेहरअली युवा बिरादरी

नरेंद्र मोदी का 3 डी अवतार

जबर सिंह वर्मा

नरेंद्र मोदी 15 अग्रस्त 2013 नकली लाल किला बनाकर प्रधानमंत्री के अवतार में आए और उसके बाद हर हर मोदी, घर–घर मोदी नारे के साथ महादेव के अवतार में प्रकट हुए। लेकिन हिंदू धर्म गुरूओं के विरोध के कारण उनको यह अवतार छोड़ना पड़ा। मोदी अब तीसरे अवतार 3 डी के रूप में आए हैं। मोदी अगले चरण के चुनाव से पहले उन क्षेत्रों के मतदाताओं तक 3 डी अवतार लेकर पहुंच रहे हैं। इस 3 डी अवतार के बाद वे विश्व रिकॉर्ड बनाने का दावा करते हैं।

मोदी ने 11 अप्रैल 2014 को 3 डी के माध्यम से 49.20 मिनट तक भाषण दिया और इस भाषण में उन्होंने 51 बार भाईयों एवं बहनों शब्द का संबोधन किया। मुझे उनके इस भाषण को सुनते हुए गोयबल्स की याद आ रही थी कि एक झूठ को इतनी बार कहो कि लोग उसे सच मानने लगें। नरेंद्र मोदी इसी से प्रेरणा लेकर लोगों के सामने भाईयों एवं बहनों को दुहरातते रहे। पहले 7.5 मिनट में उन्होंने दो बार ही भाईयों एवं बहनों का जाप किया था। शायद इतने कम समय में वे समझ गए होंगे कि लोग उनकी बात को अपने मन से नहीं ले रहे हैं। इसलिए उन्हें अपने–पन की याद दिलाते हुए 42 मिनट में 49 बार भाईयों एवं बहनों का जाम करना पड़ा। मोदी ने अपना भाषण देते हुए दर्शकों और श्रोताओं को बताया 15 सितंबर 2013 से वे 350 से अधिक स्थानों पर चुनावी सभाएं कर चुके हैं। और आज वे 3 डी के माध्यक्ष से 20 राज्यों के 100 से अधिक जगहों पर लोगों को संबोधित कर रहे हैं। जो कि विश्व रिकॉर्ड है। गुजरात विधानसभा के चुनाव में एक साथ 53 जगहों पर संबोधन करने का पुराना रिकॉर्ड भी मेरे पास गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है। लेकिन आज मैं अपने ही रिकॉर्ड को डेढ़ साल बाद तोड़ रहा हूं।

मोदी रेकॉर्ड बनाने में काफी आगे हैं और उनका रिकॉर्ड कोई तोड़ नहीं सकता, वो अपना रिकॉर्ड खुद तोड़ते हैं। मोदी जी, आपके राज्य में 2002 में सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक 1044 लोग मारे गए हैं। 223 गायब हैं और 2548 घायल हुए। जबकि गैर सरक. ारी रिपोर्टों में यह संख्या इससे अधिक बताई जाती है। क्या आप प्रधानमंत्री बनकर गुजरात के इस रिकॉर्ड को भी तोड़ देंगे। आप कहतेत हैं कि मैं फेसबुक, ट्वीटर, गुगल हैंग आउट इत्यादि के माध्यम से यंग इंडिया के साथ जुड़ा हुआ हूं। क्योंकि भारत के युवा डिजीटिल इंडिया से जुड़े हैं। डिजीटिल इंडिया ने युवाओं को समाज की वास्तविकता से काट दिया है और पुरे दिन वे फेसबुक, ट्वीटर इत्यादि पर ही अपना समय व्यतीत करते हैं। इस यंग इंडिया के युवा यात्रा के समय या ऑफिस व घरों में भी अपने सहयात्रियों, सहकर्मियों या परिवार के सदस्यों से बातचीत नहीं करते। समय मिलतते ही वे फेसबुक, ट्वीटर इत्यादि पर सक्रिय हो जाता है, जहां उनके अदृश्य दोस्त होते हैं, जिसको वे जानते भी नहीं है। यही कारण है कि आप के मीडिया प्रबंधन फेसबुक, ट्वीटर के द्वारा गुजरात की झूठी विकास कहानी गढ़ते रहते हैं। आप उन मतदाताओं की प्रशंसा करते हैं जो पहली बार वोट डाल रहे हैं, क्योंकि आपको मालूम है कि गुजरात नरसंहार के समय वे मतदाता 6–7 साल के रहे होंगे उनकी सच्चाई से अनजान होंगे।

मोदी जी कहते हैं कि कांग्रेस को जितनी ताकत मिली है, उतना ही भ्रष्टाचार बढ़ा है और 16 मई 2014 को एनडीए की सरकार बन रही है, इसलिए इसे ताकतवर करके भेजें। मोदी जी यह सही है कि कांग्रेस के शासन काल में बहुत सारे घोटाले हुए हैं। यही हालत बाजपेयी के षासन काल में भी देखने को मिली थी, जिसमें जया जेटली से लेकर बंगारू लंक्षमण तक फंसे थे। आप के ही पार्टी के एक बड़े नेता युदेव को पैसा लेकर माथे से लगाते हुए दिखाया गया था। अभी आप को भाजपा ने ताकत दिया तो आपने अपने ही बुजुर्ग नेताओं को किनारे लगा दिया। पोस्टरों, होर्डिंग्स पर मोदी ही मोदी दिखाई दे रहे हैं। जब आप ताकतवर प्रधानमंत्री बन जाएंगे तो क्या हिटलर जैसा व्यवहार करेंगे क्या?

आप टूरिज्म से देश का विकास करना चाहते हैं। इसलिए अपने राज्य में आप पटेल की मूर्ति 2500 करोड़ रूपये खर्च करके लगा रहे हैं। टूरिज्म से किसका विकास होता है ? गोवा में हम देख चुके हैं कि पेट की भूख मिटाने के लिए वहां की स्थानीय युवतियां नंगी होकर पर्यटकों के सामाने नाच करती हैं। आप क्या इसी तरह का विकास करना चाहते हैं? आप जो 2500 करोड़ रूपये मूर्ति बनाने में चार्च कर रहे हैं, क्या शिक्षा, स्वास्थ्य पर इसे खर्च नहीं किया जा सकता है। आपके द्वारा बनाए गए स्पेशल ट्रेनिंग सेंटर्स में बच्चे क्यों नहीं आ रहे हैं? आपने इन्हें वहां लाने की क्या व्यवस्था की है? अहमदाबाद के 547 सेंटरों में से 206 में कोई बच्चे नहीं हैं। इसका क्या कारण है? मोदी कहतते हैं कि विष्व में 3 डी का प्रयोग कहीं नहीं हुआ है, यह पिछड़े देश में हो रहा है। इस पिछड़े देश में जहां आम आदमी 28 से 33 रूपये प्रतिदिन पर जिंदा रहता है, वहीं अदानी ग्रुप की बाजार पूंजी 25 दिन में 20 हजार करोड़ रूपये बढ़ जाती है। यही हमारे पिछड़े देश की वास्तविकता है। जहां एक मरीज साधन नहीं होने के करण अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देता है, वहीं देश के राजनेता दिन–रात हवाई सफर कर रहे होते हैं।

मोदी की करनी और कथनी में फर्क

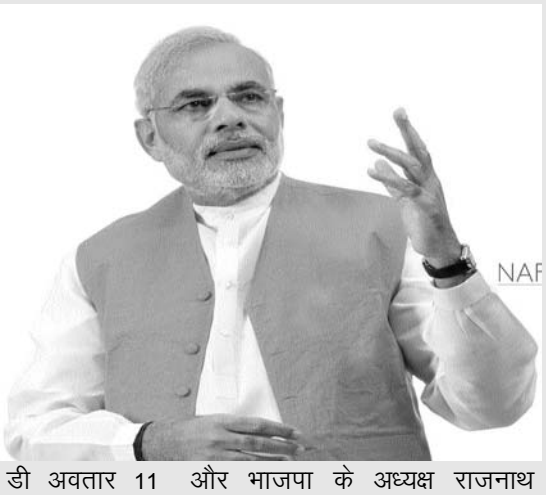

नरेंद्र मोदी का 3 डी अवतार 11 अप्रैल के बाद 14 अप्रैल को हुआ। 3 डी की एंकर ने मोदी के भाषण से पहले उनके बखान में कहा कि मोदी आपके साथ हैं, प्रत्यक्ष हैं, आप के पास हैं ऐसा एहसास आपको होगा। टेक्नोलॉजी का उतना उत्तम प्रयोग लोगों से जुड़ने के लिए मोदी जी ने ही किया है। वे विडियो कांफ्रेंसी, मोबाईल फोन, सोषल नेटवर्किंग और चाय पर चर्चा से जुड़ने के बाद 3 डी की अद्भुत मॉडल अपना रहे हैं। आंखों में सपने और दिल में विश्वास भारत के विकास का है दिल में प्यास। मोदी के भाषण से पहले इस तरह की बातें करके एक मजबूत भूमिका रखी दी जाती है। दर्शकों/श्रोताओं को कभी यह नहीं बताया गया कि इस तरह के प्रचार–प्रसार पर कितना खर्च हो रहा है। और यह पैसा कहां से आ रहा है।

14 अप्रैल अंबेडकर जयंती होने के कारण मोदी का निशाना दलित वोट बैंक पर था। "ढोल , गंवार, शुद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी" विचार को माने वाले मोदी जी अंबेडकर जयंती दलितों के लिए एक त्यौहार के रूप में याद आ गया। उन्होंने कहा कि "अंबेडकर ने छुआ–छुत के खिलाफ जंग छोड़ी थी। लोकतंत्र के लिए संविधन दिया लेकिन इंदिरा गांधी के समय लोकतंत्र खतरे में आ गया था।" इंदिरा गांधी ने अपनी ही पार्टी में अपने विरोधियों को जिस तरह से धकेल दिया आज वैसे ही आप ने अपने विरोधियों को पार्टी में हाशिए पर खड़ा कर दिया है। चुनावी पोस्टर, पर्चे मोदी मोदी और मोदी से भरी पड़ी हैं। आप के विरोधी का कोई नाम लेवा नहीं रहा। यहां तक कि आप के समर्थक और भाजपा के अध्यक्ष राजनाथ सिंह का नाम भी पोस्टरों, बैनरों से गाय है। मोदी जी कहते हैं "लोकतंत्र का मुलभूत स्वभाव होता आलोचना को सहज स्वीकार करना, विरोध का भी सम्मान करना" लेकिन आप के ही नेता और कार्यकर्ता मोदी के विरोध करने वालों को पाकिस्तान जाने की बात करते हैं। लोगों की पिटाई कर रहे हैं क्या आप ज्ञान अपने नेताओं और कार्यर्ताओं को नहीं देते हैं? या यह वक्तव्य आप का मुखौटा है?

1857 के संग्राम में हम देखते हैं कि बिरसा मुंडा जैसे कितने महासपूत, आदिवासी समाज के नौजवान देष की आजादी के लिए जान की बाजी लगा दिए थे। गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान की सीमा पर गोविंद अंग्रेजों के दांत खट्टे करने की बड़ी ताकत रखते थे। मोदी जी आप आदिवासी समाज के घरों को जलाया जा रहा है, हत्याएं की जा रही हैं तो आप चुप क्यों हैं? आदिवासी इलाकों में प्राकृतिक संसाधनों को लूटने के लिए ग्रीन हंट ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं, जिसमें आप और आपकी पार्टी शामिल है। फिर ये आदिवासियों को गुणगान क्यों? मोदी जी आप कहते हैं कि भारत ने संविधान ने बोलने का अधिकार और भावनाओं की अभिव्यक्ति करने का अधिकार दिया है, सच बोलने की ताकत दी है, तो भारत का प्रधानमंत्री चुप क्यों है? भारत के प्रधानमंत्री चुप होंगे, लेकिन इस देश की जनता सच बोलती है अधिकारों की बात करती है तो उसकी आवाज लाठियों, गोलियां व जेल के दम पर दबा दी जाती है और आप उसका समर्थन करते हैं। जब सिंगूर के किसानों ने अपनी जमीन को बचाने के लिए नैनों को भागया तो आप ने उसे आमंत्रित करके अहमदाबाद में जमीन दी। मारूति सुजुकी के मजदूर आने संवैधानिक अधिकार की मांग कर रहे थे, उस समय आप ओसामू सुजूकी को लुभाने में लगे हुए थे। संविधान का आप इतना आदर करते हैं तो कर्नाटक में धर्मान्तरण पर ईसाइयों के चर्च क्यों जलाए गए, ननों के साथ बलात्कार क्यों हुआ?

आप बोलते हैं मैं देश का विकास करना चाहते हूं मैं देश के जवानों को काम देना चाहता हूं, देश के जवानों को अवसर देना चाहता हूं उनका भाग्य बदलना चाहता हूं। देश का विकास किस तरह होगा टूरिज्म के अलावा आपके पास क्या योजना है? देश के युवकों को किस तरह का काम देना चाहते हैं, कितनी संख्या में काम देंगे, कब तक देंगे? क्या देश के युवकों को वैसा ही काम देंगे जैसा आप के भाशण में जब आपका केयर टेकर युवक आप को कोई पेपर पकड़ना चाहते हैं और आप उस पर ध्यान भी नहीं देते वह कुछ समय खड़ा रहने के बाद चला जाता है। आप के बाड़मेर में जहां से आप लोकसभा प्रत्याशी भी हैं और उस प्रदेश के तीसरी बार सीएम बने लोग अभी भी पानी को तरस रहे हैं क्या आपका यही विकास मॉडल है? क्या विकास की आप मार्केटिंग कर रहजे हैं? आप कहते हैं कि राजनीति का अपराधिकारण नहीं होने देंगे जो लोकसभा और विधानसभा में चुनकर आएं हैं, उनके लिए अलग से कोर्ट की व्यवस्था की जाएगी जो सुप्रीर्म कोर्ट की निगरानी में चलेगी और एक साल के अंदर दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। जो अपराधी हैं वो जेल में जाएंगे और जो निर्दोश को मुक्ति मिल जाएगी। इसमें किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा। आपका यह कदम स्वागत योग्य है लेकिन यह क्या गारंटी है कि वास्तविक दोषियों को जेल भेज पाएंगे? आपकी की पार्टी के गिरिराज सिंह जब आपके विरोधियों को धमकी देते हैं तो आप उन पर कार्रवाई करने की बजाय चुप हो जाते हैं। भ्रष्टाचार के लिए येदुरप्पा जैसों को आप की ही पार्टी ने दिकट दिया है।